Philosophy : Western

स्पिनोजा :- द्रव्य, गुण और पर्याय, सर्वेश्वरवाद

Que-1

## द्रव्य सिद्धान्त

स्पिनोजा ~~डेकार्ट~~ के पूर्व डेकार्ट द्रव्य को परिभाषित करते हुए कहता है कि द्रव्य वह है जो आत्मनिर्भर हो लेकिन आत्मनिर्भरता को भी द्रव्य का अनिवार्य लक्षण मानते हुए डेकार्ट द्रव्यों में दो प्रकार का भेद करता है — i- सापेक्ष द्रव्य (ईश्वर)
ii- निरपेक्ष द्रव्य (चित एवम् अचित)

स्पिनोजा डेकार्ट की परिभाषा में थोड़ा परिवर्तन करते हुए कहता है कि द्रव्य वह है जिसका अस्तित्व व ज्ञान दूसरे पर निर्भर न हो। उसके अनुसार द्रव्य एक ही होता है चित एवं अचित ईश्वर (द्रव्य) के गुण हैं। द्रव्य एक अद्वितीय स्वतः सिद्ध, स्वप्रकाश, नित्य, निरपेक्ष सत्ता है।

स्पिनोजा के अनुसार धर्मों में ईश्वर (द्रव्य) को मुख्यतः तीन रूपों में माना गया है —

i- ईश्वर स्वतंत्र है

ii- वह व्यक्तित्वपूर्ण तथा संकल्प एवं प्रयोजन से भी पूर्ण है।

iii- वह जगत का स्रष्टा है।

स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य स्वतंत्र है क्योंकि प्रत्येक वस्तु अपने ज्ञान व अस्तित्व के लिए द्रव्य पर आश्रित है। उल्लेखनीय है कि स्पिनोजा के दर्शन में स्वतंत्रता का अर्थ न तो नियंत्रण है न अनियंत्रण बल्कि आत्म निर्धारण है अर्थात ईश्वर अपने स्वरूप के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य है।

धर्मों में ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण तथा सौन्दर्य की अपेक्षा से भी पूर्ण माना गया है लेकिन स्पिनोज़ा के अनुसार ये सभी गुण ईश्वर को सीमित कर देते हैं क्योंकि प्रत्येक विशेषीकरण निषेध को सूचित करता है। इसीलिए वह ईश्वर को निर्गुण, निर्विशेष व निराकार कहता है। लेकिन यहां निर्गुण से तात्पर्य गुण के अभाव से नहीं है बल्कि सीमित गुणों के अभाव से है। इस प्रकार ईश्वर अभावों का द्योतक नहीं है बल्कि अभावों के अभावों का द्योतक है।

धर्मों में ईश्वर को जगत का कारण माना गया है। स्पिनोज़ा भी अपने दर्शन में ईश्वर को जगत का कारण मानता है लेकिन वह दृश्य कारणता को न स्वीकार कर तार्किक कारणता को स्वीकार करता है जिस प्रकार त्रिभुज में तीन भुजाएं अन्तर्निहित हैं उसी प्रकार यह जगत भी ईश्वर में अन्तर्व्याप्त है। इस प्रकार ईश्वर एवं जगत में तादात्म्य का सम्बन्ध है।

स्पिनोज़ा सृष्टि के ऊपर दो दृष्टिकोणों से विचार करता है —

i- सृष्टि प्रकृति Natura Naturata

ii- सृजनात्मक प्रकृति Natura Naturans

इस प्रकार स्पिनोज़ा के अनुसार सृष्टि एवं प्रकृति में अभेद है। इसे ही वह कहता है कि ईश्वर विश्व है विश्व ईश्वर है। यही सर्वेश्वरवाद है।

सर्वेश्वरवाद को पूर्ण रूप से समझने के लिए गुण एवं पर्याय सम्बन्धी सिद्धान्त पर विचार करना आवश्यक है। स्पिनोज़ा के अनुसार यद्यपि ईश्वर में अनन्त गुण हैं लेकिन इन गुणों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है- विचार एवं विस्तार

ईश्वर अपने आपको प्रकटीकरण इन गुणों के माध्यम से ही अभिव्यक्त करता है। गुणों के सीमित रूप ही पर्याय हैं। अतः प्रत्येक विस्तृत वस्तु विस्तार के माध्यम से द्रव्य का ही पर्याय है; इसी प्रकार प्रत्येक मानसिक अवस्था विचार के माध्यम से ईश्वर का ही पर्याय है। इस प्रकार भी यह सिद्ध होता है कि ईश्वर विश्व है और विश्व ईश्वर है।

जेम्स मार्टीनिक र स्टडी ऑफ स्पिनोजा में लिखता है कि स्पिनोजा के दर्शन में विचार एवं विस्तार ही वास्तविक है द्रव्य केवल एक काल्पनिक सत्ता है। लेकिन प्रो० हैलेट के अनुसार ऐसा मानना द्रव्य के मूल स्वरूप को भूल जाना है। पॉलफसन का भी यही मानना है कि द्रव्य ही यथार्थ है विचार एवं विस्तार तो उसके गुण हैं।

हेगल यह आक्षेप लगाता है कि स्पिनोजा के दर्शन में व्यक्ति का संकल्प स्वातंत्र्य खंडित हो जाता है – "स्पिनोजा का ईश्वर एक सिंह की गुफा के समान है जिसमें अन्दर जाते हुए जानवरों के पदचिन्ह तो दिखाई देते हैं परन्तु लौटते हुए नहीं। लेकिन ये आक्षेप उचित प्रतीत नहीं होते क्योंकि जब वह कहता है विश्व ही ईश्वर है ईश्वर ही विश्व है तो वह ईश्वर को नीचे नहीं गिराता बल्कि सृष्टि को ऊपर उठाकर ईश्वर तक ले जाता है।

दर्शन जगत में सर्वेश्वरवाद < निषेधात्मक – स्पिनोजा, सूफी; अन्तर्मुखी – उपनिषद / शंकर

ईसाई एवं सूफियों ने भावनात्मक आधार पर ईश्वर एवं विश्व को एक कहा है।

उल्लेखनीय है कि स्पिनोजा के द्रव्य और शंकर के ब्रह्म में समानता है। आचार्य शंकर के अनुसार प्रत्येक शब्द किसी वस्तु का संकेत उस वस्तु की किसी न किसी जाति, गुण, कर्म अथवा संबंध की किसी वृत्ति विशेष के साथ साहचर्य प्राप्त करके ही करा सकता है किन्तु ब्रह्म में कोई गुण, जाति, संबंध, धर्म, कर्म आदि नहीं है इससे स्पष्ट है कि शंकराचार्य के ब्रह्म के समान स्पिनोजा का द्रव्य भी अवर्णनीय है। शंकर के ब्रह्म के समान स्पिनोजा का द्रव्य भी निर्गुण है। अतः उसका वर्णन भाषा के द्वारा नहीं किया जा सकता। परमतत्व के विशिष्ट होने के कारण शंकर उसे अनिर्वचनीय कहते हैं किन्तु निरपेक्ष सत्ता को निर्गुण कहने का अर्थ गुणों से रहित होना नहीं है। स्पिनोजा के अनुसार परिमाण या संख्या की दृष्टि से गुण असीमित हैं इसलिए उनकी गणना नहीं की जा सकती। इससे

स्पष्ट है कि अनन्त गुणों से युक्त होने के कारण स्पिनोजा अपने द्रव्य को निर्गुण और अनिर्वचनीय कहता है। यही कारण है कि वह निरपेक्ष द्रव्य का संकेत करने के लिए माध्यमिक बौद्धों और अद्वैत वेदान्त के समान निषेधात्मक पद्धति का प्रयोग करता है। नेति - नेति ही स्पिनोजा के ईश्वर अथवा शंकर के ब्रह्म का सर्वोत्तम निर्वचन है। यह निर्विशेष तत्व अपरोक्षानुभूति अथवा प्रज्ञात्मक ज्ञान का विषय है।

फिर स्पिनोजा एवं आचार्य शंकर के मध्य कुछ विषयों पर मतभिन्नता है —

i – स्पिनोजा जगत को वास्तविक कहता है जबकि आचार्य शंकर मिथ्या

ii. स्पिनोजा ईश्वर एवं विश्व में तादात्म्य सम्बन्ध स्वीकारते हैं जबकि शंकर ईश्वर में जगत को सर्वव्याप्त मानते हुए भी जगत से परे मानते हैं।

iii. स्पिनोजा ईश्वर एवं जीव में भेद करता है, शंकर अभेद स्वीकारते हैं।

iv. स्पिनोजा का ईश्वर बौद्धिकता का विषय है जबकि शंकर – अपरोक्ष अनुभूति
इसीलिए स्पिनोजा सर्वेश्वरवादी है और शंकर सर्वातिसर्वेश्वरवादी